

योगशास्त्र में समाधि विमर्श

प्रो.(डॉ.) गोविन्द प्रसाद मिश्र

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष – दर्शनशास्त्र विभाग

IGNTU (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), अमरकंटक, म.प्र.

डॉ. नीलम मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफेसर,

एस. डी. महाविद्यालय (दी.द.उ.गो.वि.वि.) गोरखपुर, उ.प्र.

drgovindmishra@gmail.com and drneelammishra75@gmail.com

शोध सार

भारतीय दर्शन में द्वैतवादियों ने सृष्टि में मूल तत्त्व दो प्रकार के माने हैं, पहला- जड़ तत्त्व और दूसरा चेतन तत्त्व। दैनिक अनुभव भी जड़ पदार्थों और चेतन तत्त्व की सत्ता की अनुभूति कराते हैं। इन्हीं दोनों तत्त्वों के अनुसंधान पर आधारित दो मुख्य शास्त्र हैं- भौतिक विज्ञान और आध्यात्म विज्ञान। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में जहाँ वाह्य प्रयोगशाला में शोध कार्य होते हैं वही चेतना का शास्त्र आध्यात्म के क्षेत्र में अन्तःकरण को ही प्रयोगशाला बनाकर सत्यान्वेषण किया जाता है और यह आध्यात्मिक शोध प्रक्रिया योग साधना कहलाती है जिसमें साधक समाधि के चरण में पहुँचकर जीवन व जगत के सूक्ष्म रहस्यों, अलौकिक सत्तों एवं स्वयं के वास्तविक स्वरूप से परिचित होता है तथा जीवन के अंतिम लक्ष्य परम पुरुषार्थ 'कैवल्य' को प्राप्त करता है।

समाधि योग साधना का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। समाधि की अवस्था में ही योग का उद्देश्य पूर्ण होता है। प्रायः समाधि को योग का पर्याय माना जाता है। महर्षि व्यास ने भी अपने योग भाष्य में कहा है कि- समाधि ही योग है- योगः समाधिः¹। शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि से समाधि शब्द संस्कृत भाषा के सम और आ उपसर्ग पूर्वक धा धातु से क्तिन् प्रत्यय करने पर बना है जिस का अर्थ होता है एकाग्रता, एकाग्र करना, ध्यान की पराकाष्ठा, योग की अंतिम स्थिति, आत्म साक्षात्कार की स्थिति, जीवात्मा परमात्मा के मिलन की अवस्था आदि। ध्यान की परिपक्व अवस्था का नाम ही समाधि है। ध्यान का अभ्यास दीर्घ काल तक करते रहने पर जब उसमें परिपूर्णता आ जाती है तब वही ध्यान समाधि के रूप में परिणत हो जाता है। अतः ध्यान के बाद समाधि की अवस्था आती है। वस्तुतः समाधि ध्यान की ही अगली एवं पूर्ण अवस्था है।

¹ पातंजल योग सूत्र. व्यास भाष्य 1/1